REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

मा. कांशीराम की आर्थिक विचारधारा का विकास – एक अध्ययन

डॉ. पी. एस. चंगोले
सहयोगी प्राध्यापक तथा वाणिज्य विभाग प्रमुख,
धनवटे नॅशनल कॉलेज, नागपूर.

सारांश :

मा. कांशीराम की विचारधारा का विकास समाज परिवर्तन आंदोलन से हुआ है तथा भारत की जातीय विश्लेषण से संबन्धित है। उन्होंने ब्राह्मण व सवर्ण प्रभुत्व की व्याख्या भारत के मूल निवासियों पर आर्यो (सवर्णो) के विजय फल स्वरूप बतलाई है। वे भारत के इतिहास का जातीय दृष्टि से विवेचन करते है उसी दृष्टि से भारत का सम्पूर्ण इतिहास जातीय संघर्ष तथा जातीय प्रभुता की स्थापना का इतिहास है, अर्थात आर्यो तथा मूल निवासी शुद्रों के बीच संघर्ष का इतिहास है। हिन्दू समाज की पदानुक्रम व्यवस्था, जो आज भी बहुजनों के शोषण का प्रतिनिधित्व करती है, मा. कांशीराम की विचारधारा में वह केन्द्र बिन्दु है, जिसके चतुर्दिक और समाज के तमाम तनाव एकत्रित है। उनकी विचारधारा में सवर्ण अत्याचार और उत्पीड़न की अवधारणा प्रमुख है और राजनीतिक शक्ति ही इससे मुक्ति दिलाने वाली है। वह उनकी केन्द्रीय परिकल्पना है। उनकी विचारधारा में बहुजन स्वाधीनता की जो अवधारणा है वह राजनीतिक तथा सांस्कृतिक है, विशेषकर राजनीतिक। उनकी दृष्टि में भारतीय व्यवस्था पर सवर्ण अधिपत्य को समाप्त करना स्वाधीनता है। **आर्थिक स्वतंत्रता की सीमित अवधारणा भी भूमि सुधार के मांग के रूप में नही, अपितु भूस्वामियों के सामाजिक अधिपत्य की समाप्ति के रूप में है।**

मा. कांशीराम की विचारधारा के विकासक्रम में मनुवाद का अपना विशेष स्थान है। उनकी दृष्टि में मनुवाद को ध्यान में रखकर ही अतीत को ठीक से समझा जा सकता है और भविष्य का विश्वास के साथ सामना किया जा सकता है। मनुवाद और उसके प्रभुत्व संबंधी धारणाओं की समझ से ही प्रभावी क्रिया का पथ–प्रशस्त हो सकता है। इसी दृष्टि से वे हर समस्या को देखते, जॉचते तथा परखते थे। कांशीराम हिन्दू धर्म को आर्यो का धर्म कहते है, जो असमानता व अन्यायपूर्ण है, जिसमें मानवता विरोधी भावनाएं है, और जिसका मुख्य लक्ष्य ब्राह्मणवाद है। कांशीराम के अनुसार–मनुवाद एक धार्मिक ढॉचा है जिसके आधार पर सामाजिक व्यवस्था चलती है। सामाजिक व्यवस्था असमानता पर आधारित है, धार्मिक ढंग देकर इसकी औचित्यता सिद्ध की जाती है। मनुवाद के पास दो हथियार है–भाग्य और भगवान, जिसके आधार पर लोगों को गुमराह किया जाता है। उनको क्रियाविहीन बना दिया जाता है। हिन्दू धर्म स्वर्ग–नरक की झुटी कल्पना के द्वारा, लोक की उपलब्धियों को नकारता है जिससे लोग क्रीयाहीन हो जाते है और स्वर्ग–नरक के आधार पर मनुवादी लोग **बहुजनों का शोषण करते है, उनको गरीब व गुलाम बनाये रखते है।**

मा. कांशीराम मनुवाद को एक षडयन्त्र के रूप में देखते थे। जिस षडयन्त्र के द्वारा भारत का मूल निवासी बहुजन आज लाचार स्थिति में पहुंचा है। वे कहते है–''हम इस देश के मूल निवासी है, इस देश के मूल निवासी सदियों से शोषित और पीड़ित है। **मनुवादी व्यवस्था ने उन्हें हजारों टुकडों में तोड़ रखा है, इन लोगों को धन, ज्ञान, मान–ऐश्वर्य वैभव, प्रतिष्ठा से वंचित कर दिया है।**

मा. कांशीराम की दृष्टि में मनुवाद एक व्यापक प्रवृत्ति है। यह सभी क्षेत्रों में व्याप्त है, परन्तु आज इसकी महत्वपुर्ण अभिव्यक्ति राजनीतिक धरातल पर हो रही है। सभी राष्ट्रीय दल तथा सभी नेता मनुवादी है। इसलिए बहुजनों के सामने महत्वपूर्ण चुनौती आर्थिक–सामाजिक–राजनीतिक मनुवाद है। इस देश पर विधि का नहीं, मनु का शासन है। वे कहते थे – ''देश मनु के संविधान के अनुसार चलाया जा रहा है। हम इस सरकार को चेतावनी देना चाहते है कि देश नएं संविधान के अनुसार चलेगा।''

संकेत शब्द : विचारधारा, आर्थिक, विकास, सामाजिक, लोकतन्त्र, सम्मान, जमीनदारी, संगठन, मजदुरी,

अध्ययन का उद्देश :

1. मा. कांशीराम की आर्थिक विचारधारा का विकास उसका अध्ययन करना.
1. भारत मे आर्थिक परिवर्तन के लिये इस विचारधारा की उपयोगिता की जॉच–पडताल करना.
2. भारत से गरीबी, बेरोजगारी तथा आर्थिक अन्याय को दूर करने के उपाय सूझाना.

प्रास्ताविक :

मा. कांशीराम आंकड़े देकर प्रमाणित करने का प्रयास करते रहे कि राजनीतिक व्यवस्था पर मनुवादीयोंका का व्यापक प्रभुत्व है। उनकी दृष्टि में ब्राह्मण परम्परावादी व सामाजिक तथा धार्मिक यथास्थिति को बनाये रखने वाला तथा इस हिन्दू सामाजिक–व्यवस्था को वैध प्रमाणित करने वाला है। **अर्थात् कांशीराम की विचारदृष्टि ब्राह्मण परिवर्तन – नियम के विरूद्ध है।**[1] उनकी विचारधारा ईश्वर और आस्था तथा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की उपयोगिता के विरोध पर बल देने पर आधारित है। अपने इस विचारधारा के औचित्य को वे धर्मशास्त्रों से सिद्ध करते है और वे ऐसे धर्मशास्त्र है जो इन ब्राह्मणों के द्वारा ही रचित है तथा उनके हितों के प्रतिनिधित्व करने वाले है। वे फुले की भांति ब्राह्मणों के निहित–स्वार्थ के विरूध्द सचेत करते है। इस को उन्होने बहुजनों के बीच में गंभीरतासे प्रस्तुत किया है।

मा. कांशीराम मनुवादी व्यवस्था को समूल बदलना चाहते थे क्योंकि यह व्यवस्था ही उनके लक्ष्य की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने कहा है –

''मै सामाजिक असमानता और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरूद्ध हूं। यहॉ एक भी समान नहीं है। व्यवस्था में सवर्णो के लाभ है– हमारी मुख्य समस्या मनुवाद है जिसकी आत्मा असमानता है।''[2]

मा. कांशीराम सवर्ण प्रभुत्ता का आधार मनुवाद को मानते है। सवर्णों का शक्ति के सभी स्रोतो पर एकाधिकार है, जिसके बल पर वे बहुजनों का शोषण करते है। उनके शब्दों में –''मनुवादीयों का सभी क्षेत्रों में प्रभुत्व है। शक्ति प्राप्त करने के पांच स्रोत है – अर्थ व्यवस्था, राजनीति, अफसरशाही, वंशपरम्परा, तथा धर्म व संस्कृति। इन सभी पर मनुवादीयोंका ही प्रभुत्व है तथा ये लोग इन सभी के द्वारा शोषित का शोषण कर रहे है।

मा. कांशीराम की दृष्टि में यह प्रभावी विचारधारा, यथा स्थितिवादिता को औचित्ता प्रदान करती है। अर्थात् यह शक्ति और विशेषाधिकार को तार्किक आधार प्रदान करती है। ब्राह्मण, इसके माध्यम से समाज में अपनी सर्वोच्चता की स्थिति सिद्धि को औचित्यपूर्ण सिद्ध करता है। कर्म का सिद्धान्त उसकी सर्वोच्चता की औचित्ता सिद्धि के लिए एक प्रभावपूर्ण विचारधारा है। मा. कांशीराम की दृष्टि में राज्य अपनी शिक्षा नीति द्वारा इस विचारधारा को आधुनिक युग में फैला रही है।[3] उनकी दृष्टि में यह विचारधारा कुछ द्वारा बहुतों पर शासन करने के लिए है, इसके द्वारा सवर्ण (विशेषकर ब्राह्मण) समाज पर अपना नियंत्रण स्थापित करने में सफल है। मा. कांशीराम के अनुसार

मनुवादीयों ने अपनी विचारधारा के द्वारा बहुजनों में भाग्य और भगवान जैसी निरर्थक चेतना का सूत्रपात किया। आज भी बहुजनों को लाचार स्थिति के अतिक्रमण से रोके रखा है। इस चेतना के अन्तर्गत बहुजनों का सामाजीकरण उन्हें गुलाम बने रहने को, तथा अपनी स्थिति में सन्तुष्ट बने रहने को बाध्य करता है। मनुवादीयोंने ने चालाकी से आर्थिक–सामाजिक–मनोवैज्ञानिक साधनों द्वारा बहुजनों को गुलाम बनाये रखा है। मा. कांशीराम के दृष्टि में ब्राह्मणवाद मे जो असमानता व अन्याय है, वह हिन्दू धर्म ग्रन्थों की देन है। वे कहते है :–

''आज देश में जो असमानता है, अन्याय है, भेदभाव है – ये सभी हिन्दू धर्म ग्रन्थो की देन है, जो इस देश की समाज व्यवस्था और धर्म व्यवस्था के आधार है। इस देश के बहुजनों–शोषित समाज को अंधकार की गर्त में भटका कर हजारों वर्षो से उनके दिल और दिमान को गुलाम बनाये रखने में इन धर्म ग्रन्थों का सबसे बड़ा हाथ है। और जब तक ये धर्म ग्रन्थ रहेंगे, तब तक बहुजनों शोषितों का कल्याण नहीं हो सकता। इन्हें बनाये रखने की इनके समर्थको द्वारा पूरी कोशिश की जायेगी ताकि बहुजनों–शोषित समाज उसी अन्धकार की गर्त में भटकता रहे। आज स्वतंत्र भारत में विधि शासन नहीं है, अपितु मनुवादी व्यवस्था जो हमारे शोषण का आधार है, का शासन है।''[4]

मा. कांशीराम की गतिशील विचारधारा :

मा. कांशीराम हिन्दू धर्म को धर्म की श्रेणी में नही गिनते है, क्योंकि उनकी दृष्टि में धर्म वह है, जिसका स्वरूप मानवतावादी हो, जो मानव के बीच में बन्धुत्व व समानता की स्थापना करें और जिसमें शोषण के लिए कोई स्थान न हो। हिन्दू धर्म में वे गुण अविद्यमान है. उनके अनुसार –

''हिन्दू धर्म, धर्म नही, अधर्म है, जिस धर्म में मानव को उचित स्थान न मिले, उसे धर्म नहीं कहा जा सकता है। वर्ग व्यवस्था हमारे शोषण का तरीका है। **मेरे लिए जो संविधान में लिखा है वही धर्म है। उस धर्म को मानता हूं जो शोषण को कोई स्थान न देता हो।''**

मा. कांशीराम का धर्म मानवतावादी तथा सदाचार पूर्ण है। वे धर्म निरपेक्षता के समर्थक है। उनकी दृष्टि में किसी भी रूप में धर्म का सहारा लेना उचित नहीं है। सामाजिक– राजनीतिक क्षेत्र में धर्म का प्रयोग मानवता के लिए अभिशाप है। वे पुनरूत्थानवाद के विरूद्ध है। उनका कहना है –

''मै पुनरूस्थानवाद (फण्डमैन्टलिज्म) के विरुध्द हूँ। मेरी समझ के अनुसार पुनरूत्थानवादी शक्तियों के पास दो हाथियार – ईश्वर तथा तलवार है। मै लोगों से कहता हूं कि धर्म के पास तर्क नही है, जहॉ से ईश्वर की शुरूवात होती है, वही से तर्क का अन्त होता है। अधिकांश धर्म अविवेकी है, वे मानवता को विभाजित करते है। मै उनके विरूद्ध हूँ। मै मानवता को सबसे बडा धर्म मानता हूँ। हमारे समर्थको को अपने–अपने धर्म को व्यक्तिगत स्तर पर मानने की स्वतंत्रता होगी, लेकिन बी.एस.पी. के मंच पर एक दूसरे के भाई–भाई होंगे, उनका धर्म मानवता होगा।''[5]

मा. कांशीराम भारतीय राजनीति को धर्म निरपेक्ष नहीं मानते। वे भारत की समभाव धर्म नीति के समर्थक नहीं है। वे कांग्रेंस पर कुछ विशेष धर्मो को बढ़ावा देने का आरोप लगाते थे। उनका कहना था कि कांग्रेस अन्य विश्वास सम्प्रदायवाद ओर धर्मान्धता को बढ़ावा दे रही है।

राज्य को एक सीमा तक धार्मिक संस्थानों को कायम करने तथा इन्हें नियंत्रित करने का अधिकार प्राप्त है। भारतीय धर्म निरपेक्षता को ये विशिष्ट लक्षण स्वतंत्रता संग्राम के काल में ही परिभाषित हो गए थे।

मा. कांशीराम धर्म निरपेक्ष राजनीति में विश्वास करते थे। जो वर्तमान धर्म निरपेक्षता की अवधारणा से उनके अनुसार पूर्णतः भिन्न था। वे अपनी धर्म निरपेक्ष राजनीति की व्याख्या करते हुए कहते है :–

''हमारे राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के पालन की स्वतंत्रता होगी, किसी के ऊपर कोई धर्म थोपा नहीं जायेगा और न ही सरकार किसी धर्म विशेष को और आगे बढ़ाने का प्रयास करेगी। हमारी सरकार पूर्ण धर्म निरपेक्ष सरकार होगी और वह कांग्रेस की धर्म निरपेक्षता से अलग होगी। धर्म और राजनीति दोनों अलग–अलग तत्व है।''[6]

मा. कांशीराम का मानवतावादी दृष्टिकोण धर्म परिवर्तन नीति के विरूद्ध है। वे धर्म परिवर्तन को समस्या का समाधान नही मानते है। वे कहते है –

'(मैं तो इनसे बहुजनों शोषितों) कहता हूं कि हिन्दू सिख व मुसलमान बनने से क्या होगा। **कुछ बनना है तो पहले इंसान बनों।''**[7]

उनका दृष्टिकोण मानवतावादी तथा इहलोक वादी के साथ उपयोगितावादी भी है। वे सीमित आधार पर धर्म परिवर्तन को बहुजनों–शोषितों की शक्ति के ऱ्हास के रूप में देखते है। उनका कहना हैं :–

''धर्म परिवर्तन करना है तो यह एक मुश्त हों। मुटठी भर लोगों के ऐसा करने से कोई बात नहीं बनती। लोग इथर–उधर बॅटते हैं, तो इस वर्ग की ताकत और कमजोर होती है।''[8]

मा. कांशीराम की धर्म परिवर्तन की अवधारणा शक्ति व सत्ता के सन्दर्भ में देखते हैं। वे बहुजनों में अलगॉव की चेतना धार्मिक नहीं, आर्थिक–सामाजिक–राजनीतिक आधार पर उत्पन्न कर रहे थे।

मा. कांशीराम की आर्थिक विचारधारा का विकास

मा. कांशीराम के विचार में भारत के मूल निवासियों की गरीबी और दुःख वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के आर्थिक ढांचे के कारण है, अतएव इसमे परिवर्तन की आवश्यकता है। ये परिवर्तन किस प्रकार के होंगे तथा इनका क्षेत्र क्या होगा इसका विस्तृत एवं पूर्ण विवरण से संबंधित कुछ बांते वे उद्घाटित करते है, जो उनके दल के सत्तासीन होने पर कार्यान्वित होंगी। **जैसे राज्य द्वारा धीरे–धीरे प्रमुख उद्योगों का अधिग्रहण, निर्वाह योग्य मजदूरी और काम करने की समुचित परिस्थितियो का निर्माण, उच्चतम तकनीक मशीनरी की स्थापना तथा खनिज संसाधनों पर सरकारी नियंत्रण, बड़े किसानों से जमीन लेकर भूमिहीनों को देने की अपेक्षा खाली पड़ी जमीन का सरकार अधिग्रहण करके भूमिहीनों में वितरित करेंगी, सरकार स्वयं अपने कृषि फार्मो का निर्माण, उस भूमिका अधिग्रहन राष्ट्रीयकरण के माध्यम से करेगी जिसका अभी उपयोग नहीं हो रहा है।**[9]

मा. कांशीराम का यह प्रस्ताव समाजवादी रास्ते पर नहीं, बल्कि एक आर्थिक नीति की पहचान की दिशा में हैं, जो कि जातीय परिप्रेक्ष्य से निर्धारित की गई है। उनकी दृष्टि में यह कार्यक्रम उस पृष्ठभूमि का निर्धारण कर सकता है, जिसमें विचारधारा को विकसित किया जा सकता है। **उन्होनें व्यक्तिगत सम्पत्ति के दोषों का मुख्य स्त्रोत भू–स्वामियों (उनके दृष्टि से सवर्ण) की उन स्वतंत्रताओं एवं प्राधिकारों में देखा, जिसके आधार पर वे बहुजनों–शोषितों का शोषण करते है और अपने विशेषाधिकार को जीवित रखे हुए है। बड़े और शक्तिशाली जमींदार वर्ग की परिभाषा आर्थिक आधार पर न होकर जातीय आधार पर है। अर्थात एक प्रकार से कहे तो मनुवादी सवर्ण जमीदारों के प्रति मा. कांशीराम की विचारधारा देशहित की है और इस वर्ग की आलोचना वे कड़े शब्दों में करते है। उनका कहना है कि कृषि उत्पादन जमींदार वर्ग पर निर्भर नहीं हैं ये जमीन पर कोई काम नहीं करते । बहुजनों शोषितों का शोषण करते है, उन पर अत्याचार करते है, और ये आर्थिक असमानता एवं राजनैतिक प्रतिक्रियावाद के समर्थक है। मनुवादी और सांमतवादी व्यवस्था राजनीति पर हावी हैं।**

मा. कांशीराम इस व्यवस्था के विरोधी होते हुए भी, भूमि सुधार के लिए विस्तृत कार्यक्रम प्रस्तुत करते है। उनके कार्यक्रम का रास्ता सवर्ण भूमि अधिग्रहण तक नहीं जाता, वे इस कार्य को महत्वपूर्ण कार्य नही मानते। वे कहते है **''हम उनसे (सवर्ण भू–स्वामी) कहेंगे हम आपके लिए खतरा नहीं है। हम आपकी जमीन, उद्योग–पैसा कुछ नहीं छिनेंगे, जो आप का है आपको मुबारक हो, ऐसे छोटे मोटे कामों के लिए फुरसत कहॉ होगी हमें, कई बडे काम करने होगे। इसी सरकार के योजना आयोग का कहना है कि जितनी जमीन आज हल के नीचे है, उससे दुगुनी खेती योग्य खाली पड़ी है, वह जमीन, प्राकृतिक संपदा हमारे लिए काफी होगी।**[10]

मा. कांशीराम जमीदारों से भूमि अधिग्रहण तो नहीं करना चाहते, पर उनके ऊपर कुछ सीमाएं अवश्य लगाना चाहेत है। ये सीमायें जमीन के उपयोग एवं मजदूरों की दृष्टि से होगी। उन्होंने कहा :

''मै जमीदारों की जमीन नहीं लूँगा, क्योकि पूरे जमीन का एक तिहाई भाग ही उनके पास है। हम भूमि सुधार नहीं करेंगे, अगर वे चाहेंगे तो उनको और जमीन दे दूंगा। हम उनके खेत न लेकर उनके खेत का मजदूर लेंगे। उनको स्वयं खेती में काम करना होगा। अगर वे मजदूरों से काम लेना चाहते है, तो उनकी सरकार द्वारा निश्चित की गई मजदूरी तथा अन्य सुविधाएं देनी होगी। मेरा विश्वास है कि वे इतना नहीं दे पायेंगे और न ही स्वयं काम कर पायेंगे। अतः मजबूर होकर जमीन सरकार को देगें। क्योंकि ऐसी स्थिति में खेती लाभकारी नहीं रहेंगी, उन लोगों को मजबूर होकर खेत सरकार को देना होगा, साथ ही यदि वे दो साल तक लगातार भूमि खाली रखते है तो तीसरे साल हम उनसे जमीन छीन लेंगे।[11]

मा. कांशीराम सवर्णो की भू–सम्पत्ति पर प्रत्यक्ष प्रहार न करके अप्रत्यक्ष ढ्ंग से उसका अधिग्रहन करना चाहते हे। यह उनकी इस समझ का परिणाम है कि सवर्णों पर प्रत्यक्ष प्रहार सामाजिक उपद्रव का रूप ले सकता है। इसलिए वे बहुजनों का भौतिक उत्कर्ष सरकारी माध्यम से करना चाहते है।

अपनी सरकार की **कृषि नीति** पर वे प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा –

मेरी सरकार खाली पड़ी दो तिहाई जमीन को खेती योग्य बनायेगी, सरकार उसमें खेती करेगी। एक–एक लाख हेक्टेयर के सरकार के पास कृषि फार्म होंगे। इन फार्मों का मशीनीकरण होगा।[12]

मा. कांशीराम भूमि की भॉति ही निजी उद्योग का अधिग्रहण नहीं करना चाहते। जमीदारों की भांति उद्योगपतियों पर भी कुछ सीमाएं निर्धारित करेंगे उन्होंने कहा –

हम उद्योगपतियों से उनके उद्योग नहीं लेंगे, सारी पूंजी का उनके पास बहुत कम भाग है। कितने उद्योग और कितनी पूंजी उनके पास है। (मा. कांशीराम ने स्वयं सवाल किया और कहा) केवल केन्द्र सरकार के बजट का ही अल्पमात्र भाग पूंजी के रूप में उनके पास है। उद्योगपति लोग सरकार के पैसे से उद्योग लगाते है और चलाते है, अपनी पूंजी बहुत कम लगाते है। हमारी सरकार उनको आर्थिक मदद नहीं करेगी, उनके कारखाने के लिए लाईसेन्स नही किया जायेगा, उनको अपने पैसे से उद्योग लगाने और चलाने होगे तथा सरकार द्वारा निश्चित सुविधाएं मजदूरों को देनी होगी।[13]

मा. कांशीराम व्यापक, उद्योगीकरण अपने देश के संसाधनों के आधार पर ही करना चाहते है। वे प्राकृतिक संसाधनो का निर्यात नही करेंगे। और अधिकांश आबादी को इन्हीं उद्योगों में लगायेंगें। कृषि पर आबादी के दबाव को कम करने को उनका यही तरीका होगा। वे कहते है :–

''हम बेसिक (मुलभूत) उद्योग लगायेंगे, व्यापक उद्योगीकरण करूगा। अभी तक नाममात्र का उद्योगिकरण हुआ है। हमारे यहॉ ये प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग विदेश वाले कर रहे है। वे यहॉ से सस्ते दाम पर कच्चा माल ले जाते है, और ऊँचे दाम पर अपने माल को बेचते है। सरकार संसाधनों का प्रयोग नहीं करना चाहती, क्योंकि कच्चे माल में दलाली और उधर से बने माल में भी दलाली ली जाती है। हमारे शासन में ऐसा नहीं होगा। हम इन संसाधनों का प्रयोग स्वयं करेंगे, इनके प्रयोग के लिए बेसिक उद्योग लगाऊँगा। हमारे पास पर्याप्त पूंजी है। उसी से उद्योगीकरण व्यापक पैमाने पर किया जा सकता है। हमारी सरकार का यही लक्ष्य होगा, देश का पूर्णरूप से उद्योगीकरण कर दिया जायेगा, कृषि में अल्प भाग में लोग काम करेंगे। इस नीति से 35 प्रतिशत लोगों का पिछड़ापन दूर हो जायेगा। यदि देश की 85 प्रतिशत जनता पिछड़ी रहेगी तो देश पिछड़ा रहेगा, अतः अपने पिछड़ेपन को दूर करके हम देश के पिछड़ेपन को दूर कर सकेंगें।[14]

मा. कांशीराम की दृष्टि में भारत में जनसंख्या की कोई समस्या नहीं है, बल्कि वे यहॉ तक मानते है कि यहॉ आबादी की कमी है, प्राकृतिक संसाधनों की पर्याप्तता की दृष्टि से। गरीबी का कारण शासन की नियति और कुछ लोागो का स्वार्थ है। उन्होंने कहा –

''हिन्दुस्तान में जनसंख्या की कोई समस्या नहीं है। हमारे यहॉ आबादी की कमी है। संसाधन और पूंजी की नहीं। यहॉ के प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए देशवासियों की जनसंख्या वृद्धि के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आज की सभी राजनीतिक पार्टियां शूद्रो का शोषण करके जिन्दा है। हम लोग इनके शोषण के बजाय, इन्हें संगठित करके भारत की प्राकृतिक संपदा का शोषण करेंगे। समाज का शोषण करने वाले सवर्ण लोग इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इसलिए नहीं करते कि भारत का मूल निवासी अमीर हो जायेगा। और उस पर उनकी प्रभुता नहीं चलेगी। तथा इन संसाधनों में वे दलाली नहीं पा सकेंगे। उनका ऐशो आराम समाप्त हो जायेगा। अभी हमारे पास जो संसाधन है और पूंजी है उसी से सभी लोगों को उचित रोजगार मिल जायेगा। सत्य बात तो यह है कि संसाधनों और पूंजी के उचित प्रयोग करने पर आदमी की कमी पड़ जायेगी पांच वर्ष में हम बेरोजगारी समाप्त कर देंगे।[15]

मा. कांशीराम श्रमिकोंको जीविका निर्वाहन मजदूरी के अतिरिक्त पर्याप्त मानवीय सुविधाएं भी देना चाहते है। उन्होंने कहा –

''हमारी सरकार मजदूरों को अधिक से अधिक सुविधाएं देगी। सरकारी कारखाने मजदूरों के लिए एयरकंडीशन होंगे। हम कम्युनिस्टों की भांति नहीं करेंगे कि बात मजदूरों की करते है और मदद सेठों की करते है।[16]

''आज टिकैत जैसे किसान नेता कृषि उत्पादन का मूल्य बढ़ाने की बात करते है, परन्तु कृषि मजदूरों की मजदूरी बढ़ाने की बात कभी नहीं करते.''

मा. कांशीराम **आर्थिक असमानता** की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा –

''सरकारी आकड़ो के अनुसार इस देश के अकेले विड़ला के पास, इस देश के सम्पूर्ण एस.सी., एस.टी. के लोगों से ज्यादा सम्पत्ति हैं । इस तरह केवल बनियां इस देश के 15–20 करोड़ लोगों के बराबर है। आर्थिक गैर बराबरी की भी इससे बड़ी मिसाल दुनिया के किसी मुल्क मे नही मिलती। यह आर्थिक गैर बराबरी एक मिसाल है। और सामाजिक गैर बराबरी तो हम लोग भोग रहे है। आज हम सामंतो तथा पूंजीपतियों पर आश्रित होते जा रहे है। ग्रामिण भारत में बहुजन लोग व्यापक रूप से अपने जीवन संघर्ष के लिए, भूमिधरों पर निर्भर है और जब हम संगठित होकर इनके अत्याचार, अन्याय का विरोध करते है, और अपना हक मांगते है तब वे हमारे मां–बहन की इज्जत लूटते तथा हमारे घर जलाते है, और सरकार इनका साथ देती है।[17] शोषणकारी ग्रामिण अर्थव्यवस्था में केवल तभी परिवर्तन लाया जा सकता है जब स्वयं हमारी सरकार बने। शासक जाति इसको दूर करने की इच्छुक नहीं है।

मा. कांशीराम के अनुसार वर्तमान शासक जाति हमारी स्थिति में बदलाव नहीं चाहती हैं। उन्होंने कहा –

हमारे देश में प्राकृतिक सम्पदा की कोई कमी नहीं है, खेती की कोई कमी नहीं है, यदि कमी है तो नियत की कमी है। इस देश के मूल निवासी है बहुजन समाज के लोग। इसलिए यह सरकार नहीं चाहती है कि देश के मूल निवासियों को इतने बड़े पैमाने पर रोजगार मिले, इसलिए यह सरकार न, लोहा निकालती है, न कोयला न ही अन्य धातु निकालती है।[18]

सरकार की भूमि नीति की आलोचना करते हुए वे कहते है :–

'भूमि सुधारों का प्रचार बहुजन समाज को मूर्ख बनाने हेतु धूर्तता भरी चुनावी चाले है। आजादी के बाद भूमिहीन किसानों की संख्या तीन गुनी बढ़ी है।[19]

इसी संदर्भ में वे किसान आन्दोलनों की आलोचना करते हुए कहते है :–

''अनेक संगठन और दल किसान आन्दोलन चलाते है और किसानों की बातें करते है, परन्तु जो सचमुच किसान है, उनकी बात कोई नही करता। ऐसा किसान जो खेती करता है परन्तु उनके पास खेती नहीं है, और दूसरी तरफ ऐसा किसान है जो खेती नहीं करता है, परन्तु खेती है। वे संगठन उस

निट्ठले और फर्जी किसान की बातें अधिक करते है। देश में बहुत सारी जमीन खाली पड़ी है। क्या किसी आन्दोलनकारी ने यह आवाज उठाई कि खाली पड़ी जमीन भूमिहीन किसानों को दे दी जाय।

मा. कांशीराम बहुजनों की शोषित स्थिति के लिए और उसकी गरीबी के लिए सामाजिक व्यवस्था को दोषपूर्ण मानते है। उन्होंने कहा –

''सामाजिक व्यवस्था के कारण ही आर्थिक दिशा में जो धोखा हुआ है, उस धोखे को खत्म करने, आर्थिक दिशा में भी समानता स्थापित करने के लिए हम आर्थिक आन्दोलन चला रहे है। इस असमानता को समाप्त करने के लिए हम आन्दोलन निरन्तर चलाते रहेंगे आन्दोलन को जारी रखना हमारा खास कार्यक्रम है।''[20]

अपने भाषणों में अर्थनीति के सम्बन्ध में मा. कांषीराम चर्चा करते थे। और वह भी केवल सवर्ण प्रभुत्व या मनुवादी व्यवस्था के सन्दर्भ में। वे कहते थे कि हमारी लड़ाई रोजीरोटी की नहीं, शासन में भागीदारी की है। वे धीरे–धीरे एक–एक समस्याओं के समाधान की नीति रखते थे। यह विचारधारा का विकासक्रम था।

वे अपने समर्थकों और कार्यकर्ताओं से कहते थे कि, **हो सकता है कि आप लोग सारी समस्याओं को एक ही साथ समाप्त करने की सोचते हो, परन्तु आप लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि अगर हम एक ही झटके में सारी की सारी समस्याएं एक साथ–साथ समाप्त करना चाहते तो मै समझता हूं कि जिस तरह हम आज तक कनफयुज्ड रहें है, उसी तरह आगे आने वाले समय में भी कनफयूज्ड रह जायेंगे। और समस्याएं ज्योकि त्यों बनी रहेगी। हमें सबसे पहले आर्थिक–सामाजिक समानता और सम्मान प्राप्त करना है।**[21] **भीख मांगकर नहीं, अपने बल पर।**

फिर भी मा. कांशीराम सत्ता प्राप्ति के बाद जो अपनी आर्थिक योजना की रूपरेखा रखते है, वह योजना मिश्रित अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। वैज्ञानिक तकनीकी आधार पर विकास करना उनका लक्ष्य है इसी के माध्यम से ही उन्नति को वे सम्भव मानते है। वे कहते है कि विज्ञान तथा तकनीक के आधार पर अमेरिका इतना बढ़ा हुआ है।

स्वयं उन्होंने कहा कि, ''जैसे भी सम्भव होगा, मै एक नए वोट बैंक का निर्माण करना चाहता हूं।'' कांशीराम राजनीतिक पद्धति से बहुजनों उद्धार करना चाहते है। उनकी दृष्टि में राज्य ही बहुजनों का संरक्षक होगा। यद्यपि कांशीराम ने आर्थिक कार्यो में कई प्रकार के राजनीतिक नियंत्रण को उचित माना है, उनका सिद्धान्त राज्य समाजवादी है।[22] वह साधारणतया सम्पत्ति के व्यक्तिगत स्वामित्व का आदर करते है। यह नहीं कि वे सम्पत्ति को एक उदारवादी की भॉति मानव योग्यता की सिद्धि का प्राकृतिक साधन, स्वतंत्र जीवन का एक आवश्यक साधन मानते है, अपितु उनकी दृष्टि में बहुजन स्वाधीनता के लिए यह गौण मुद्दा है। वे बहुजन कल्याण, समाज में समानता के आधार पर सम्पत्ति के पुर्नवितरण के द्वारा नहीं, अपितु सम्पत्ति पर राज्य के नियंत्रण के द्वारा करना चाहते है। वे आर्थिक जीवन में उपस्थित असमानता के विरूद्ध है। वे अधिक सम्पत्ति को राज्य के अधिकार में करके तथा उन्हें बहुजनों–शोषितों के आवश्यकताओं के अनुकूल रूप देकर, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते है। यह दृष्टिकोण राज्य समाजवाद की स्थिति को व्यक्त करता है। एक प्रकार से वे में राज्य–समाजवाद के पक्षधर प्रतीत होते है। उनकी आर्थिक नीति उपयोगिता के सिद्धान्त पर भी आधारित है। वे व्यक्तिगत स्वामित्व के अन्त के पक्षधर नहीं है, परन्तु यथासंभव, भू–सम्पत्ति के दुरूपयोग के अन्त करने के लिए उनकी दृष्टि में व्यक्तिगत सम्पत्ति को समाप्त किए बिना ही सरकारी नियंत्रण द्वारा बहुजनों की गरीबी का अन्त हो सकता है। वे सत्ता अधिग्रहण द्वारा बहुजनों में नागरिक श्रेष्ठता की जो संभावनाएं है, उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करने का लक्ष्य रखते है।

मा. कांशीराम बहुजन वर्ग की गरीबी की ओर बार–बार ध्यान आकर्षित करते है। यह गरीबी उनकी दृष्टि में मनुवादी व्यवस्था की देन हैं। उन्होंने आर्थिक गरीबी को सामाजिक और राजनीतिक गरीबी से जोड़ा है। स्पष्टतः गरीबी जरूरतो की पूर्ति न होने की अवस्था है, जो न केवल वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के कारण है परन्तु साथ ही एक छोटे समूह द्वारा सत्ता पर नियंत्रण से भी है। इसलिए बहुजनों को राजसत्ता पर नियंत्रण कर अपनी गरीबी को दूर करना होगा।[23] ऐसी विचार दृष्टि रखने वाले मा.कांशीराम इस विचारधारा पर विश्वास नहीं करते कि आधुनिक समाज इस सिध्दान्त पर आधारित है कि राजनीतिक शक्ति आर्थिक शक्ति पर निर्भर करती है।

वे तो इस मान्यता पर बल देते है कि राजनीतिक शक्ति आर्थिक शक्ति को ताकतवर बनाती है और यह कि जो राजनीतिक शक्ति हासिल करते है वे आर्थिक शक्ति भी हासिल करते है ।

मा. कांशीराम की विचारधारा में प्रायः उनकी भॉवी नीति की व्याख्या की अपेक्षा, ब्राह्मण व सवर्ण के विशेषाधिकारों, उन विशेषाधिकारों की उत्पत्ति तथा उनके विनाश पर बल और बहुजनों के पतन की व्याख्या अधिक है। विचारधारा चिंतन और हालात से विकसित होती रहती है। उनके पूर्ववर्ती मनुवाद विरोधी बहुजन–शोषित नेताओं के विचारों में भी यह सामान्य तथ्य रहा है। सबने अपनी विशेष दृष्टि एवं परिस्थिति के अुसार मनुवाद की आलोचना की तथा उसके विनाश पर बल दिया। मा. कांशीराम का नया कार्य मात्र इतना कहा जा सकता है कि उन्होंने सवर्ण वर्गो से संघर्ष तथा विरोध एवं शोषण के आधार पर, एक नई संकल्पना बहुजन समाज और उनके बन्धुत्व के रूप में दी। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में मनुवाद के विरूद्ध यह अपने ढंग का एक नया आन्दोलन है।[24] ''बहुजन'' वर्तमान मनुवाद निर्मित समाज के विसंगति की सामान्य कल्पना है। जिसके अन्तर्गत अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्गो के अलावा, मुस्लिम, सिख व ईसाई भी है। लेकिन यह बात जरूर है कि मा. कांशीराम के पहले इसके विरोध की सामूहिक बहुजन चेतना नहीं थी। फुले ने शूद्रों तथा अतिशूद्रो को संघटित किया। तथा मनुवाद शब्द का प्रयोग नही किया था, परन्तु उनमें इसका आशय निहित था। विद्रोही बनाया डॉ.अम्बेडकर ने अतिशूद्रो को तथा पेरियार ने शूद्रों को।[25] इसी तरह अन्य ब्राह्मणवाद विरोधी आन्दोलन प्रायः अपनी जातीय एकजुटता तक ही सीमित थे। मा. कांशीराम ने पहले एक नई बहुजन चेतना का निर्माण करने का प्रयास प्रारम्भ किया, जिसमें शूद्रों–अतिशूद्रों के आलावा सिख, ईसाई और मुस्लिम भी है। यद्यपि इनके पूर्ववर्ती ब्राह्मणवाद विरोधी नेताओं की इन वर्णों के प्रति सहानुभूमि थी और बहुत से ईसाई, मुस्लिम व सिख इन आन्दोलनों के साथ जुड़े भी थे, **परन्तु मा. कांशीराम ने सर्वप्रथम इन सभी वर्गो को हिन्दू शूद्रों, अतिशूद्रों के साथ एकजुट करने का प्रयास प्रारम्भ किया और इन सभी को बहुजनों–शोषित के रूप में बहुजन की मान्यता दी।**[26] इस मान्यता (बहुजन के पीछे) सामाजिक वर्णो की वह संरचना है, जिसका निर्माण मनुवाद के आधार पर हुआ है। मा. कांशीराम का विचार इन बहुजनों को एक नये युग का संदेश दे रहा है, जिसमे परिवर्तन की शक्तियॉ स्थायित्व की शक्तियों के साथ संघर्ष करने को उनके अनुसार तैयार हो रही है। इनका संघर्ष स्थायित्व और उस प्रथा की शक्ति से है जिस पर सवर्णों की प्रभुता और बहुजनों का शोषण निर्भर है।

निष्कर्ष :

1. मा. कांशीराम भारत मे आर्थिक समानता प्रस्थापित करना चाहते थे।
2. राज्य समाजवाद जो भारतके संविधानका अभिन्न अंग है उसपर अमल करके सरकारी जमीन पर सरकार व्दारा खेती करना तथा बडे उद्योग लगाकर बेरोजगारी का अंत करना यह मा. कांशीराम के आर्थिक विचारधाराका निचोड है।
3. आर्थिक समानता लानेके लिए शासनपर कब्जा करना यही उपाय है ऐसा मा. कांशीराम का विकसित परिपक्व विचार है।
4. जमीनदार तथा पुंजीपती इनका अर्थतंत्रपर का नियंत्रण सरकारी आदेष से समाप्त करना आसान तरिका है यह मा. कांशीराम के व्दारा बताया गया आर्थिक विचारधाराका विकसित उपाय है।
5. मजदुरोंका आर्थिक कल्याण करना यह मानवतावादी आर्थिक सोच मा. कांशीरामने समाजके सामने रखी।

उपाय :

1. लोकतन्त्र के माध्यमसे षासनपर कब्जा करे तथा आर्थिक बराबरी के उपक्रम लागू करे।
2. सरकारी खेती तथा बडे उद्योग लगानेके लिए बजेट मे प्रावधान करने की शक्ती शासक के पास होती है। आर्थिक विचारधारा पर अमल करनेका यह सविंधानिक विकसित मार्ग है।

3. सामान्य मतदाता जानकार बने तथा अपने आर्थिक अधिकार प्राप्त करने के लिए संघटित होकर मा. कांशीराम के विचारधाराके अनुसार कार्य गतीमान करे।
4. भारतीय संविधान के व्दारा प्राप्त अधिकार का समझदारी के साथ प्रयोग करे।
5. सामान्य नागरिक जागृक बनकर बहोत बडी परिवर्तनकी मुव्हमेंट मा. कांशीराम की आर्थिक विचारधारा को विकास के रास्तेपर अग्रेसित करे।

संदर्भ :

1. ए एस अब्राहम, एंड जस्टीफाइस द मींसे, टाइम्स आफ इंडिया, दिल्ली 8 अगस्त 1996.
2. हिंदुस्तान टाइम्स, हाऊ बीएसपी ब्रोक नार्थ्स पालिटिकल मोल्ड़, दिल्ली 20 सितंबर, 1993.
3. हिदुस्तान टाइम्स, उपरोक्त।
4. संडे, 11 दिसंबर 1988.
5. आम्बेथ राजन, माई बहुजन समाज पार्टी, एबीसीडोई प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृष्ठ 8.
6. फाइनेंशियल एक्सप्रेस को एक रपट।
7. टेलीग्राफ, तीन दिसंबर 1989.
8. द वीक, 16 अप्रैल 1992.
9. सूची इंडिया, अप्रैल 1992.
10. आम्बेथ राजन, उपरोक्त, पृष्ठ 9.
11. आम्बेथ राजन, उपरोक्त, पृष्ठ 9.
12. कांशी राम का यह खुला पत्र आरके सिं ने अपनी पुस्तक कांशी राम और बीएसपी, कुशवाहा बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद (उप्र), 1996 के परिशिष्ट में संकलित किया है।
13. मधु लिमये ने अपनी पुस्तक आंबेडकर : एक चिंतन, पटेल एजूकेशनल सोसायटी, दिल्ली में उद्धृत किया है।
14. रजनी कोठारी, राइज आफ बहुजनस एंड रिन्यिूड डिबेट आन कास्ट, ईपीडब्लू, 25 जून, 1994.
15. कांशीराम का खुला पत्र, संकलित, आरके सिंह, उपरोक्त।
16. आम्बेथ राजन, उपरोक्त।
17. आरके सिंह, उपरोक्त, पृष्ठ 92.
18. बसपा का यह सांगठनिक विवरण आरके सिंह की पुस्तक से।
19. आम्बेथ राजन, उपरोक्त।
20. आम्बेथ राजन, उपरोक्त।
21. पेट्रियट, चार मई, 1996.
22. अंजलि पुरी, कास्टिंग हिज शेडो, इंडियन एक्सप्रेस।
23. आम्बेथ राजन, उपरोक्त।
24. हिंदुस्तान टाइम्स, 6 अप्रैल 1991।
25. बहुजन संगठक का यह विवरण आरके सिंह की पुस्तक से।
26. आरके सिंह, उपरोक्त।